



लखनऊ, सोमवार
12 अक्टूबर, 2026
नगर संस्करण
शुब ११.००
पृष्ठ 3B+4-22

दैनिक जागरण



www.jagran.com

जगर जेठ, दिल्ली, सप्त प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, कर्नाटक, तमिल नाडु, सिक्किम प्रदेश और च. प्रदेस में प्रकाशित

आइटीआइ में अनुदेशकों की भर्ती का बदलेगा तरीका 2

जेन-जी से होते पीएम: आपमें दुनिया को समाधान देने की क्षमता 13

दैनिक जागरण लखनऊ, 12 अक्टूबर, 2026

जागरण सिटी लखनऊ

www.jagran.com

'मरीजों के लिए बने वेंटिलेटर कमांड सेंटर'

जागरण संवाददाता • लखनऊ : वेंटिलेटर बेड के लिए अक्सर मरीजों को भटकना पड़ता है। भागदौड़ में मरीज का कीमती समय बर्बाद होता है और कई बार इलाज मिलने में देरी हो जाती है। ऐसे में वेंटिलेटर बेड की उपलब्धता की जानकारी तत्काल मुहैया कराने के लिए वेंटिलेटर कमांड सेंटर बनाने की जरूरत है। इसके जरिए तीमारदारों को मोबाइल एप या हेल्पलाइन नंबर पर अस्पतालों में खाली वेंटिलेटर बेड की जानकारी मिल सकेगी। इससे मरीज को समय रहते उचित अस्पताल पहुंचाने में मदद मिलेगी। डा. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के एनेस्थीसिया विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने ये सुझाव दिए।

लोहिया संस्थान के पूर्व निदेशक डा. दीपक मालवीय ने कहा कि वेंटिलेटर बेड की उपलब्धता की जानकारी के लिए जिलेवार या प्रदेश स्तर पर व्यवस्थित तंत्र विकसित किया जाना चाहिए। इससे मरीजों के



कार्यक्रम में पूर्व निदेशक डा. दीपक मालवीय, प्रो. पीके दास व अन्य • संस्थान

परिजनों को अलग-अलग अस्पतालों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे और जरूरत के समय बेड की स्थिति पता चल सकेगी। संस्थान के एनेस्थीसिया विभाग के अध्यक्ष डा. पीके दास ने कहा कि वेंटिलेटर की जरूरत वाले मरीज की हालत बेहद नाजुक होती है। ऐसे में परिवारीजन को बेड की तलाश में कई अस्पतालों में भटकना पड़ता है। इस प्रक्रिया में काफी समय निकल जाता है। यदि कमांड सेंटर के माध्यम से अस्पतालों में उपलब्ध वेंटिलेटर बेड की वास्तविक स्थिति की जानकारी मिले तो मरीज को सीधे संबंधित अस्पताल पहुंचाया जा

सकता है। चिकित्सा शिक्षा विभाग के पूर्व महानिदेशक डा. डीएस नेगी ने कहा कि कोरोना काल में कमांड सेंटर ने बेहतर तरीके से काम किया था। उसी तर्ज पर वेंटिलेटर कमांड सेंटर स्थापित करने के लिए सरकार को पहल करे। डा. यश जावेरी ने कहा कि डाक्टरों, नर्सों और सफाई कर्मचारियों को समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि गंभीर मरीजों को सुरक्षित उपचार मिल सके।

इस अवसर पर डा. मुस्तहसिन, पीजीआई के डा. तन्मय घटक, डा. सुजीत राय, डा. मनोज त्रिपाठी, मीना जौहरी आदि उपस्थित रहे।